International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

अनुसूचित जाति में धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन एक अध्ययन

सुशील कथूरिया
शोधार्थी समाजशास्त्र विभाग, जीवाजी विश्वविद्यालय, ग्वालियर म0प्र0

संक्षेप
यह अध्ययन अनुसूचित जातियों में हो रहे धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तनों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है, जिसमें आधुनिकता, शिक्षा, शहरीकरण, सामाजिक गतिशीलता और राजनीतिक चेतना जैसे कारक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। पारंपरिक धार्मिक आस्थाएँ, जो लंबे समय से सामाजिक संरचना और सामुदायिक पहचान का आधार रही हैं, धीरे–धीरे परिवर्तित हो रही हैं। इन समुदायों में धार्मिक रूपांतरण (ब्वदअमतेपवद), नव–बौद्ध आंदोलन, सुधारवादी प्रवृत्तियाँ तथा जातिवार सामाजिक असमानताओं के विरुद्ध प्रतिरोधी सांस्कृतिक अभिव्यक्तियाँ प्रमुख रूप से उभर रही हैं। अध्ययन यह भी दर्शाता है कि सांस्कृतिक प्रथाओं में विविधता, सामाजिक अनुष्ठानों में परिवर्तन, लोक परंपराओं का पुनर्गठन और आत्मसम्मान की भावना के विस्तार ने अनुसूचित जातियों की सामुदायिक चेतना को एक नई दिशा दी है। मीडिया, शिक्षा और राजनीति ने न केवल धार्मिक व्यवहारों को प्रभावित किया है, बल्कि सांस्कृतिक प्रतीकों और सामाजिक पहचान के पुनर्निर्माण को भी गति दी है। शोध से पता चलता है कि धार्मिक एवं सांस्कृतिक परिवर्तन केवल आध्यात्मिक स्तर पर नहीं, बल्कि सामाजिक–आर्थिक सशक्तिकरण और समानता की आकांक्षा से भी गहराई से जुड़े हैं। समग्र रूप से यह अध्ययन संकेत करता है कि धार्मिक व सांस्कृतिक परिवर्तन अनुसूचित जातियों की सामाजिक गतिशीलता का एक महत्वपूर्ण माध्यम बनकर उभर रहे हैं, जो भारतीय समाज में लोकतांत्रिक मूल्यों, सामाजिक न्याय और सांस्कृतिक समावेशन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने में सहायक है।

Keywords: धार्मिक परिवर्तन, सांस्कृतिक रूपांतरण, अनुसूचित जातियाँ, सामाजिक गतिशीलता, पहचान पुनर्निर्माण

परिचय

संवैधानिक प्रावधानों एवं अधिकारों की प्राप्ति से अनुसूचित जाति के धार्मिक एवं सांस्कृति जीवन में परिवर्तन आया है। संवैधानिक प्रावधानों की प्राप्ति से उनकी शिक्षा के स्तर में वृद्धि हुई है, जिससे उनमें आधुनिकीकरण, नवीन ज्ञान–विज्ञान, दृष्टिकोण एवं विचारों में वृद्धि हुई है। अब वे अंधविश्वास एवं कुरुतियों से धीरे–धीरे मुक्त हो रहे हैं। संविधान प्रदत्त धार्मिक समानता व स्वतंत्रता प्राप्ति से उनके धार्मिक एवं सांस्कृतिक विचारों, आदर्शों एवं जीवन शैली में परिवर्तन आया है एवं आ रहा है।

प्रत्येक समाज में धर्म एवं संस्कृति का अपना विशेष महत्व होता है। प्रत्येक धर्म एवं संस्कृति की अपनी मूलभूत विशेषताएँ होती है। धर्म एवं संस्कृति एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। धर्म पवित्र वस्तुओं से संबंधित विश्वासों एवं क्रियाओं की एक एकीकृत व्यवस्था है।

प्राचीन भारतीय सामाजिक व्यवस्था में हिन्दू समाज को चार वर्णों में बांटा गया एवं प्रत्येक वर्ण के कार्य एवं अधिकार निश्चित किए गये। धार्मिक आधारों पर चतुवर्ण के सदस्यों पर निर्योग्यताएँ लादी गई। उन्हें अधिकारविहीन, उपेक्षित एवं तरिष्कृत किया गया।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

अनेक समाज सुधारकों ने समाज की इस विभेदक व्यवस्था का विरोध किया। स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात् संवैधानिक प्रावधानों के द्वारा अनुसूचित जाति के सदस्यों को सभी क्षेत्रों में समानता एवं स्वतंत्रता प्रदान की गई है, जिससे उनके जीवन में आमूलचूल परिवर्तन आया है एवं आ रहा है।

उद्देश्य –

प्रस्तुत शोध आलेख का प्रमुख उद्देश्य यह जानकारी प्राप्त करना है कि संवैधानिक प्रावधानों से जिन अधिकारों की प्राप्ति अनुसूचित जाति के सदस्यों को हुई है, उससे उनके धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन पर क्या प्रभाव पड़ रहा है। उनमें क्या और कैसे परिवर्तन आ रहा है और उससे उनके विचार, भावनाएँ, सांस्कृतिक मूल्य एवं सरकारों में किस प्रकार के परिवर्तन आ रहे हैं।

अध्ययन क्षेत्र –

प्रस्तुत शोध के लिए ग्वालियर महानगर के 65 वार्डों में निवारसत प्रमुख्य अनुसूचित जातियों– जाटव, कोरी, कोली एवं वाल्मिकी को अध्ययन का समग्र बनाया गया है।

न्यादर्शों का निर्धारण –

शोध कार्य हेतु ग्वालियर महानगर में निवासरत जाटव, कोरी, कोली एवं वाल्मिकी अनुसूचित जाति के 200 पुरुष एवं 200 स्त्रियों का चयन देव निर्देशन प्रणाली के अंतर्गत वर्गीकृत निदर्शन एवं लाटरी प्रणाली का उपयोग करते हुये इस प्रकार किया गया है कि वे समग्र का प्रतिनिधित्व कर सकें।

उपकल्पनाएँ –

प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्नांकित उपकल्पनाओं की स्थापना करके प्राप्त तथ्यों का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया हैं।

(1) ग्वालियर महानगर के अनुसूचित जाति के सदस्यों के जीवन में संवैधानिक प्रावधानों से प्राप्त अधिकार एवं समानता प्राप्ति से धार्मिक जीवन में परिवर्तन आया है।

(2) ग्वालियर महानगर के अनुसूचित जाति के सदस्यों को संवैधानिक अधिकारों की प्राप्ति से उनकी शिक्षा का स्तर बढ़ा है, नगरीकरण, आधुनिकीकरण बढ़ने से अब वे समाज की मूलधारा से जुड़े हैं, जिससे उनके सांस्कृतिक जीवन में परिवर्तन आया है। उनके अंधविश्वास, कुरुतिया जादू–टोने संबंधी विचारों में परिवर्तन आया हैं।

शोध विधि –

प्रस्तुत अध्ययन में तथ्यों का संकलन अनुसूची एवं साक्षात्कार विधि द्वारा किया गया। अनुसूची के प्रथम स्तर पर व्यक्तिगत जानकारी तत्पश्चात् सूचनादाताओं की सामान्य विशेषताएँ जैसे उनकी आर्थिक स्थिति, जीवन स्तर, धार्मिक अधिकार, मंदिर प्रवेश, पूजा–पाठ, भूत– प्रेत, मोक्ष प्राप्ति, वेशभूषा आदि से संबंधित प्रश्नों का समावेश किया गया।

प्रश्नों को अनुसूची में सरल ढंग से व्यवस्थित रूप से रखा गया, जिससे स्पष्ट उत्तर मिल सके एवं उनका सही विश्लेषण किया जा सके।

सर्वेक्षित समूह –

(1) सर्वेक्षित समूह में 99.25 प्रतिशत पुरुष एवं 0.75 प्रतिशत स्त्रियाँ थी ।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

(2) वैवाहिक स्थितिरू चयनित प्रतिनिधियों में 99.25 प्रतिशत विवाहित पुरुष एवं 0.75 प्रतिशत विधवा महिलाएँ थीं।

(3) व्यवसायिक स्थितिः चयनित प्रतिनिधियों में 25.75 प्रतिशत कृषि कार्य 25.25 प्रतिशत व्यापार, 31. 50 प्रतिशत नौकरी करते हैं एवं 17.50 प्रतिशत वृद्ध व्यक्ति हैं, जो कुछ नही करते।

(4) आयु समूह : सर्वेक्षित समूह में 01–25 वर्ष आयु समूह के 16.25 प्रतिनिधि, 26–50 वर्ष आयु वर्ग में 53.75 प्रतिशत एवं 51–75 आयु वर्ग में 27.00 प्रतिशत एवं 75 वर्ष से अधिक आयु वर्ग में 03.00 प्रतिशत सदस्य है।

चयनित सूचनादाताओं से धार्मिक एवं सांस्कृतिक जीवन से संबंधित विभिन्न पहलूओं पर जानकारी प्राप्त की एवं तथ्यों का विश्लेषण करने का प्रयास किया गया।

सर्वप्रथम सूचनादाताओं से यह जानकारी प्राप्त की गई कि क्या आप नियमित पूजा करते हैं। इस संबंध में निम्न जानकारी प्राप्त हुई–

तालिका क्रमांक–1

पूजापाठ संबंधी विचार

क्रमांक	क्या आप नियमित पूजा करते हैं	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	299	74.75
2	नहीं	101	25.25
	योग	**400**	**100.00**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 74.75 प्रतिशत सूचनादाताओं के अनुसार वे नियमित रूप से पूजा–पाठ करते हैं। धार्मिक अधिकारों की प्राप्ति से अब इस समूह की आर्थिक आस्था बढ़ी है। 25.25 प्रतिशत सूचनादाता ऐसे हैं जो कभी–कभी, विशेष अवसरों पर ही पूजा पाठ नियमित करते हैं।

तालिका क्रमांक–2

जादु–टोने संबंधी विचार

क्रमांक	क्या आज जादू–टोने में विश्वास करते हैं	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	97	24.25
2	नहीं	303	75.75
	योग	**400**	**100.00**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 75.75 प्रतिशत सूचनादाता ऐसे है जो जादु–टोने में विश्वास नहीं करते हैं। जो स्पष्ट करता है कि अनुसूचित जाति के सदस्यों में शिक्षा का स्तर बढ़ा है, वे नवीन ज्ञान– विज्ञान के संपर्क में आए हैं, जिससे उनके विचार तर्कयुक्त एवं विज्ञान सम्मत हुए हैं। जबकि 24.25 प्रतिशत उत्तरदाता ऐसे हैं जो आज भी जादु–टोने में विश्वास करते हैं। ये स्थिति प्रमुख रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में आशिक्षित सदस्यों में विशेष रूप से पाई गई है।

तालिका क्रमांक–3

पुनर्जन्म सम्बन्धी विचार

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

क्रमांक	पुर्नजन्म सम्बन्धी विचार	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	89	22.25
2	नहीं	311	77.75
	योग	**400**	**100.00**

उपरोक्त तालिका दर्शाती है कि 77.75 प्रतिशत न्यादर्श पुनर्जन्म में विश्वास नहीं करते हैं, जो उनमें बढ़ता शिक्षा का स्तर, आधुनिक मानसिकता एवं दृष्टिकोण की वृद्धि को नष्ट करता है। जबकि 22.25 प्रतिशत न्यादर्श आज भी पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं । ये स्थिति उन सदस्यों में है जो अशिक्षा एवं अंधविश्वास व पुरानी रुढ़ियों में जकड़े हुए होने के कारण पुनर्जन्म संबंधी धारणाओं में विश्वास करते हैं।

तालिका क्रमांक–4

भूत–प्रेत में विश्वास संबंधी विचार

क्रमांक	भूत–प्रेत में विश्वास करते हैं	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	89	22.25
2	नहीं	311	77.75
	योग	**400**	**100.00**

उपरोक्त तालिका दर्शाती है कि 77.75 प्रतिशत सूचनादाता भूत– प्रेत में विश्वास नहीं करते हैं। जिसका प्रमुख कारण यह पाया गया कि आधुनिक ज्ञान–विज्ञान का संपर्क एवं आधुनिक दृष्टिकोण व नगरीकरण का प्रभाव अब इन पर पड़ने लगा है। जबकि 22.25 प्रतिशत उत्तरदाता भूत–प्रेत में आज भी विश्वास करते हैं। यह मानसिकता विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में आधुनिक ज्ञान विज्ञान की कमी एवं पुरानी मानसिकता के कारण पायी जाती है।

तालिका क्रमांक–5

मंदिर जाने संबंधी विचार

क्रमांक	आप नियमित रूप से मंदिर जाते हैं	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	201	50.25
2	नहीं	199	49.75
	योग	**400**	**100.00**

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि 50.25 प्रतिशत उत्तरदाता नियमित रूप से मंदिर जाते हैं, जो धार्मिक भावनाओं को व्यक्त करता है। एवं इसका प्रमुख कारण संवैधानिक धार्मिक अधिकारों की प्राप्ति भी है। संवैधानिक अधिकारों की प्राप्ति से अब उन्हें मंदिर प्रवेश का अधिकार मिला है। जबकि 49.75 प्रतिशत उत्तरदाता नियमित रूप से मंदिर नहीं जाते हैं। जिसका प्रमुख कारण व्यस्तता एवं समय की कमी है।

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

तालिका क्रमांक–6
पारंपरिक वेशभूषा संबंधी विचार

क्रमांक	क्या आप/परिवार के सदस्य पारंपरिक वेशभूषा पहनते हैं।	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	19	04.75
2	नहीं	381	95.25
	योग	**400**	**100.00**

उपरोक्त तालिका दर्शाती है कि 95.25 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा ६ परिवार के सदस्यों द्वारा आज पारम्परिक वेशभूषा नहीं पहनी जाती है। ये सदस्य आधुनिकता, पाश्चात्य मानसिकता के प्रभाव, नकरीकरण, नवीन समाज के संस्कृति एवं सभ्यता के संपर्क में हैं। जबकि केवल 04.75 प्रतिशत उत्तरदाताओं द्वारा ६ परिवार के सदस्यों द्वारा आज भी पारम्परिक वेशभूषा पहनी जाती है। ये सदस्य आधुनिक शिक्षा एवं पाश्चात्य मानसिकता के संपर्क में ज्यादा नहीं आए हैं एवं आज भी ग्रामीण परिवेश में रहने के कारण परंपरागत वेशभूषा पहनते हैं।

तालिका क्रमांक–7
धर्म परिवर्तन संबंधी विचार

क्रमांक	क्या आपने/परिवार के सदस्यों ने धर्म परिवर्तन किया है।	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	00	00
2	नहीं	400	400
	योग	**400**	**100.00**

तालिका से पता चलता है कि 100 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने न तो स्वयं ६ परिवार के सदस्यों ने अपना धर्म परिवर्तन किया है। जिसका कारण संवैधानिक रूप से उन्हें अपनी ही धर्म में सम्मान, समानता एवं अधिकारों की प्राप्ति होना है।

तालिका क्रमांक 8

क्रमांक	क्या आप शिक्षा को आर्थिकध्भौतिक उन्नति के लिए आवश्यक मानते हैं।	संख्या	प्रतिशत
1	हाँ	373	93.25
2	नहीं	027	06.75
	योग	**400**	**100.00**

International Journal of Engineering, Science and Humanities
An international peer reviewed, refereed, open-access journal
Impact Factor 8.3 www.ijesh.com ISSN: 2250-3552

उपरोक्त तालिका स्पष्ट करती है कि 93.25 प्रतिशत उत्तरदाता शिक्षा को आर्थिक एवं भौतिक उन्नति के लिए आवश्यक मानते हैं। शिक्षा प्राप्ति से उनका कर्म एवं स्वयं में उनका विश्वास बढ़ा है। सोच, विचार, तर्क समझ में वृद्धि होती है। जबकि 06.75 प्रतिशत उत्तरदाता मानते है कि केवल शिक्षा प्राप्ति से ही व्यक्ति की उन्नति नहीं होती है वरन् इस हेतु भाग्य व उचित समय की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है। उपरोक्त विचारों को जानने के पश्चात् उपकल्पनाओं का परीक्षण किया गया।

उपकल्पनाओं का परीक्षण –

उपरोक्ता तालिकाओं के निष्कर्षों के आधार पर उपकल्पनाओं का परीक्षण निम्न प्रकार से किया गया।

(1) प्रथम उपकल्पना हेतु तालिका क्रमांक 1 एवं 5 व 7 के निष्कर्ष बताते हैं कि 74.75 प्रतिशत सूचनादाता नियमित रूप से पूजा करते हैं, 50.25 प्रतिशत सूचनादाता नियमित रूप से मंदिर जाते हैं एवं 100 प्रतिशत सूचनादाताओं ने स्वयं या परिवार के किसी सदस्य ने धर्म परिवर्तन नहीं किया है, जो प्रथम उपकल्पना सत्य सिद्ध करते हैं।

(2) द्वितीय उपकल्पना हेतु तालिका क्र. 6 एवं 9 के निष्कर्ष बताते हैं कि 95.25 प्रतिशत सूचनादाता अब स्वयं ६ परिवार के सदस्य पारंपरिक वेशभूषा नहीं पहनते एवं 93.25 प्रतिशत सूचनादाता शिक्षा प्राप्ति को आर्थिक एवं भौतिक उन्नति के लिए आवश्यक मानते हैं, जिससे सिद्ध होता है कि उनके सांस्कृतिक जीवन में परिवर्तन आया है। 75.75 प्रतिशत सूचनादाता जादू–टोने में एवं 77.75 प्रतिशत सूचनादाता भूत–प्रेत में विश्वास नहीं करते हैं। जिससे द्वितीय उपकल्पना भी सत्य सिद्ध होती है।

निष्कर्ष –

उपरोक्त तथ्यों से निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि संवैधानिक प्रावधानों एवं अधिकारों की प्राप्ति से अनुसूचित जाति के धार्मिक एवं सांस्कृति जीवन में परिवर्तन आया है। संवैधानिक प्रावधानों की प्राप्ति से उनकी शिक्षा के स्तर में वृद्धि हुई है, जिससे उनमें आधुनिकीकरण, नवीन ज्ञान–विज्ञान, दृष्टिकोण एवं विचारों में वृद्धि हुई है। अब वे अंधविश्वास एवं कुरुतियों से धीरे–धीरे मुक्त हो रहे हैं। संविधान प्रदत्त धार्मिक समानता व स्वतंत्रता प्राप्ति से उनके धार्मिक एवं सांस्कृतिक विचारों, आदर्शों एवं जीवन शैली में परिवर्तन आया है एवं आ रहा है।

संदर्भ –

(1) शर्मा एवं गुप्ता, यूनिफाईड समाजशास्त्र, साहित्य भवन पब्लिकेशन्स, 1998.
(2) मुखर्जी रविन्द्रनाथ, सामाजिक शोध व सांख्यिकी, विवेक प्रकाशन, दिल्ली 1999.
(3) पहाड़िया बी. एम., भारत में सामाजिक परिवर्तन (स्त्रोत, प्रक्रिया एवं परिणाम), विद्या भवन, इन्दौर, 1994–95.